उंबरखिंड का नाटक

करतलबखान का उतरा नशा - अंबेनली में शरणागत - भाग 1

भीषण कुरवंडे घाटी से बडी कठिनाई से मुगल सेना उतरी

ड्यूक्स नोज नामक प्रसिद्ध धनुष्याकार सिरा

Select a location highlighted in blue to enter Street View.

Submarine Point

Google

DigitalGlobe Google Camera : 2,573 m 18°43'48"N 73°21'57"E 632 m 100%

संकरे पहाडी स्थान में हुई दयनीय स्थिति
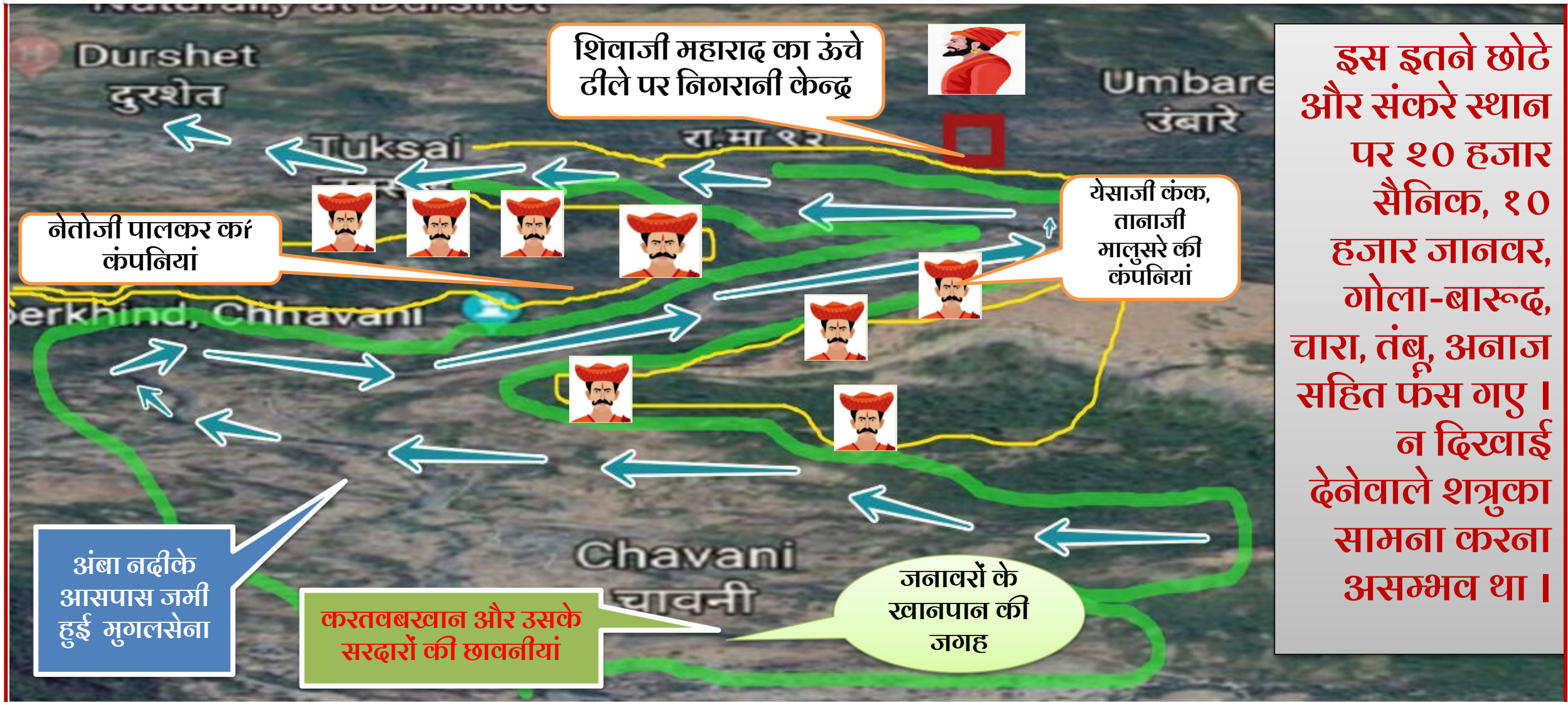
वर्तमान थल सेना, नौसेना, वायुसेना के विशेष अधिकारियों की प्रस्तुती

उंबरखिंड (घाटी) का समरभूमि स्मारक

'शोधकार्य की मर्यादाएं'

- प्रस्तुति खोजपूर्ण स्वतंत्रता पर आधारित है। यह माना जाता है कि आज के सैन्य कमांडरों को उन अवधियों की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए सैन्य दृष्टिकोण से ऐसे मिशनों की योजना बनाने और उन्हें अंजाम देने के निर्देश मिलते हैं। वे उन्हें कैसे लागू करेंगे?
- भारतीय इतिहास में विश्वसनीय साक्ष्यों के अभाव में ऐतिहासिक लड़ाइयों का विशिष्ट विवरण उपलब्ध नहीं हो पाता है। अतः इन अभियानों को उन लड़ाइयों में शामिल व्यक्तियों के व्यवहार, शौर्य, साहस, सैन्य प्रबंधन कौशल, उपलब्ध संसाधनों और शस्त्रों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत किया जाता है।
- इस बात का कोई दावा नहीं है कि घटनाएँ वास्तव में वर्णित के अनुसार घटित हुईं। अभियान कैसे हुए होंगे इसकी संभावना दिखाने का प्रयास किया गया है।

महान सेनापति शिवाजी महाराज की रणभूमि में योग्यता

- शिवाजी महाराज ने आत्मसमर्पण करने वाली विशाल सेना का सम्मान किया।
- किस तरह उन्होंने पीछे छूटी विशाल युद्ध सामग्री का विवेकपूर्ण तरीके से वितरण और निपटान किया।
- यह अभियान शिवाजी महाराज के व्यापक विचारों वाले व्यक्तित्व को दर्शाता है।
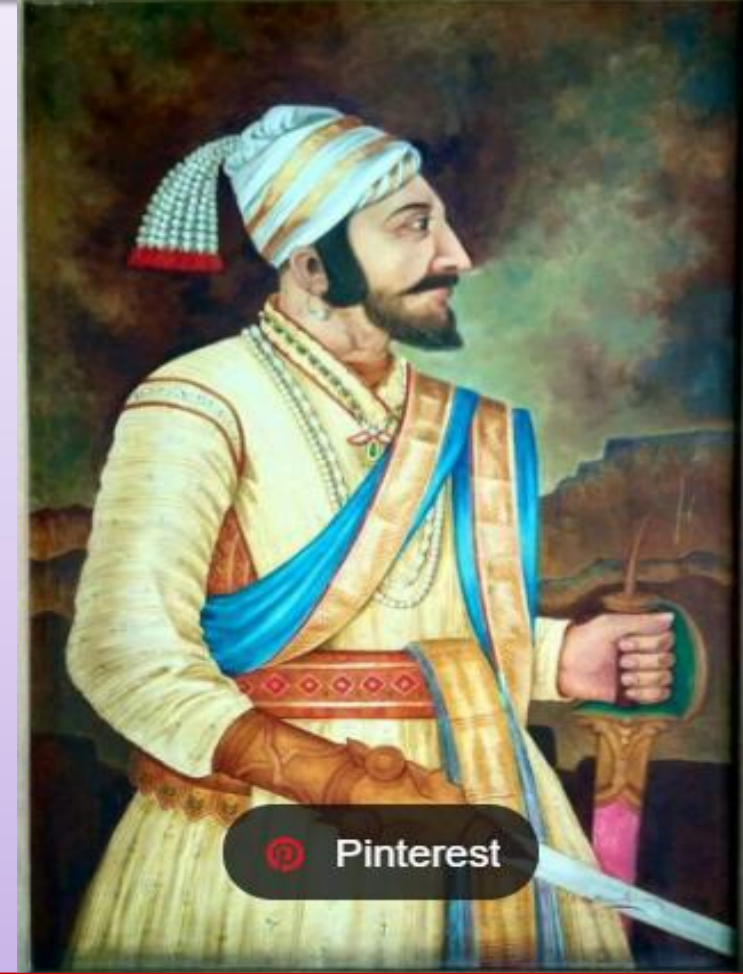
शाहिस्तेखानने नियुक्त किया था करतलबखान को

- १६६१ में कोकण के मराठी प्रदेशपर एक बडा अभियान चलाने की रूपरेखा बनाई गई ।
- अभियान का सेनापतिपद करतलबखान नामक उजबेक सरदारको सौंपा गया । यह खान घमंडी था । इसके साथ अनेक सरदार नियुक्त किए गए । उनमें सावित्रीबाई देशमुख उर्फ पंडिता रायबागन नामक चतुर वऱ्हाड क्षेत्र की सरदारनी भी थी ।
- सेनाकी निश्चित संख्या उपलब्ध नहीं है; परन्तु वह पन्द्रह हजार से कम निश्चित ही नहीं थी । अन्य साधनोंका विचार करनेपर वह संख्या बीस हजार होगी, यह मानकर आगे का व्यूह रचा गया है ।
- इस करतलब को पेण, पनवेल, नागोठणे, इस क्षेत्रपर विजय प्राप्त करने का आदेश दिया; परन्तु करतलब अति उत्साही अर्थात घमंडी था । उसने कहा कि ‘हुजूर मैं नागोठणे, पेण, पाली, पनवेल तो जीत ही लेता हूं; परन्तु कोकण स्थित शिवाजी के कल्याण भिवंडी से दक्षिण की ओर (महाड की ओर) स्थित सम्पूर्ण क्षेत्र पर भी कब्जा कर लेता हूं ।

करतलबखान कौन था ?

- प्रश्न कै. बाबासाहेब पुरंदरेजी से पूछा होता, तो वे कहते...
- "करतलब" यह पदवी उनके पिताजी को जहांगीर की सेना में उनके शौर्य के कारण मिली थी ।
- सत्ता की होड में औरंगजेब के पक् षमें उसने दाराशुकोह के पक्ष में लडनेवाले जोधपुर के जसवंत सिंह को पराजित किया था । इसलिए पिताकी करतलब पदवी उसे देकर शाहिस्तेखान के विश्वसनीय सरदार के रूपमें उसकी नियुक्ति की गई थी।
- कुछ समय पूर्व ही परिंडे के किलेपर विजय प्राप्त करने के अभियान का सफल नेतृत्व किया था । उसका सम्मान करते हुए उसे कोकण के महत्त्वपूर्ण दुर्ग जीतने का अभियान सौंपा गया था ।
- कल्याण का खोया हुआ नियंत्रण प्राप्त कर उसके साथ व्यापार से मिली हुई आय जमा करने की व्यवस्था करना आवश्यक था ।

१. करतलबखान को इस अभियान के लिए क्यों चुना गया ?

- ❖ लेफ्टिनंट जनरल विनोद खंडारे से पूछनेपर वे कहेंगे,
- ❖ "शाहिस्तेखान को अपने क्षेत्र का अर्थात उजबेक सरदार अधिक निकटवर्ती लगा ।"
- ❖ कुछ समय पूर्व ही परांडा किलेपर विजय प्राप्त की थी ।
- ❖ पहाडी मार्ग का अभ्यस्त नहीं था, समुद्र किनारे की उमस भरी हवा उससे सहन होनी चाहिए थी; परन्तु तब भी वह इस कठिनाई पर विजय प्राप्त करेगा, ऐसा विश्वास था ।
- ❖ अन्य सरदारों से वरिष्ठ था और उसमें कुछ कर दिखाने की जिद थी ।

२. कुरवडे घाट से उतरने का करतलबखान ने क्यों निश्चित किया ?

पाली का तिराहा १

पाली की ओर नदी से

व्यापारी तिराहा २

अंबा नदी

सरस गड

पाली गावठाण

AON
RASAL
NH548A
DAPODE
GHERA SARASGAD
BALAP
SH93
WAVLOLI
RABGAON
SIDDHESHWAR KHURD
NH548A
WAZAROLI
TAMSOLI
BALSAI
NH66
MADHALI
HEDAWALI
KANSAI

- ब्रिगेडियर हेमंत महाजन कहते,
- "बोर घाट से नीचे उतरकर पुनः पाली की ओर लौटने का मुख्य विकल्प उसने प्रारम्भ में चुना; परन्तु लोनावला तक का मार्ग पार करने पर उसका साहस बढा ।
- पथिक (राहगीर) कुरवडे घाट से अंबा नदीके पात्र के मार्ग से सीधे पाली की चौकीपर पहुंच जाएं, तत्पश्चात सुधागड को मुख्य केन्द्र बनाकर भिवंडी-कल्याण के सुनसान किले वर्षा प्रारम्भ होने से पूर्व सहज जीतकर यह अभियान समाप्त किया जा सकता था ।
- प्रकार अकस्मात आक्रमण कर शिवाजी को चकमा दिया जा सकता है' ऐसा विचार किया ।

३. शाहिस्तेखानने कौनसा कार्य सौंपा था ?

- ❖ दक्षिण की सुबेदारी बिना किसी कठिनाई के शान्ति से व्यतीत करनी थी ।
- ❖ आदिलशाह ईरानी था । उसकी शिवाजी महाराज से नहीं बनती थी । इसलिए वह शिवाजी महाराज को विजापुरकर से लडवाते रखना चाहता था ।
- ❖ मुगली शासन के लिए आवश्यक धन समुद्री व्यापार से प्राप्त करनेपर भतीजा औरंगजेब अधिक कलह नहीं करेगा । उसके लिए पुराने अहमदनगर शाह ीके कल्याण और भिवंडी दुर्ग किसी प्रकार प्राप्त करने थे ।
- ❖ वर्षा प्रारम्भ होने से पहले कोकण पट्टीपर कब्जा करना था ।
- ❖ वह कार्य सौंपकर अपना काम निश्चित होगा, ऐसा उसे भरोसा था ।
- ❖ बेटी परी का निकाह दिल्लीके वजीरे-आजमके शहजादे के साथ धूमधाम से करवान ेका उसका विचार था ।

- इति एयर मार्शल भूषण गोखले.

४. अभियान में कुल कितनी सेना होनी चाहिए ?

- ❖ इतिहासकारों ने शोध कर विविध संख्या प्रस्तुत की है ।
- ❖ सब का विचार करने पर न्यूनतम संख्या २० हजार मानी गई है । छत्रपति शिवाजी महाराज के पास २ हजार की खडी एवं १ हजार की आरक्षित सेना होने का अनुमान है।
- ❖ घाट से नीचे उतरने पर अंबा नदी का पात्र और दोनों ओर के पर्वतों के मध्य का क्षेत्र यातायात, लडनेवाले जानवर, मजदूर लोगों सहित २० हजारकी सेना बडी कठिनाईसे उसमें से पार होगी, ऐसी प्राकृतिक स्थिति है।
- ❖ इस पर अलग से विचार किया जाए। - इति विंग कमांडर शशिकांत ओक.

५. यदि उसका सामना शिवाजी महाराज से नहीं हुआ होता, तो उसने अपना मुख्य पडाव कहां बनाया होता ?

- ❖ अंबा नदी के पात्र के मार्ग पर वह पाली गांवके पास आया होता । वहां यातायात के अनेक मार्ग एकत्रित हो रहे थे । चौल बंदर का माल चुंगी नाका, भिवंडी-कल्याण दुर्ग की ओर जानेवाली प्राचीन मजबूत चौकी थी ।
- ❖ सैनिकों के रहने की व्यवस्था हो जाती । वहांसे यातायात पर दबाव बनाकर ‘कर’ वसूल करना सम्भव था । सेना की गतिविधियों पर नियन्त्रण करना सम्भव था ।
- ❖ महाराज को कल्याण-भिवंडी मार्ग से ही जाना पडेगा, तब उनका बंदोबस्त करना सम्भव था ।
- ❖ सुधागड नामक अत्यन्त कठिन दुर्ग को मुख्यालय बनानेपर शिवाजी महाराज को तलहटी में लडाकर मारना सम्भव होगा आदि सम्भावनाओं पर विचार करते हुए सरसगड के पश्चात सुधागड की ओर वह निकला था... इति एयर मार्शल सुनीत सोमण.

पाली थानेका महत्त्व
भिवंडी किला
कल्याण किला
चौल बंदर
पाली नाका
सुधागड
कल्याण रस्ता वसूली ठाणे
पाली - सुधागड ठाणे
चौल बंदरमार्ग वसूली नाका
अहमद नगरके निजामशाहीके ये थाने मुगलों की दूध देती गाय थी । उसे शिवाजी महाराजसे पुनः प्राप्त करना जीवन मरण का प्रश्न था ।
Thane
Vasai Virar
Bhiwandi
Borivali
Kalyan
Junnar
Choul, Alibag, Maharashtra
Panvel
Manchar
Mumbai
Karjat
Rajgurunagar
Khopoli
Chakan
Pimpri
Pali
Pune
MAIN TOWN
KONDGAON
PIGONDE
CHIKHALGAON
RASAL
WIDSAI
CHIVE
Khopoli Pali Road
TAIL BAIL
NADSUR
KADSURE
NEW TOWN
PUI
Sudhagad
BHARJE
TAMSOLI
BHISE
APATWANE
USAR
NIDI TARF ASHTAMI
Roha
GOMASHI
VITTHALWADI
DIGHEWADI
SAMBALE
NH66
SH93
SH94
2 km
© 2022 TomTom

अभियान में सम्मिलित सरदार

- इसका उत्तर इतिहास एवं युद्ध अध्येता विद्याधर रायरीकर देते समय कहेंगे,
- 'उसके साथ राजपूत घराने के कच्छप, चौहान, अमरसिंह, मित्रसेन तथा मराठा दल के सरदार जाधवराव, जसवंत कोकाटे और रायबागन नामक स्त्री योद्धा भी थी ।
- उनमें समाविष्ट सरदारों के सैनिकों के परिधान, भाषा, धर्म, भोजन, लडनेकी पद्धतियां अलग-अलग थीं । इस भिन्नता के कारण उनमें एकता, आपसी सम्पर्क के अभाववश एकसूत्रता न होने की सम्भावना थी ।
- इस अभियान के पश्चात करतलबखान के नाम का उल्लेख भी दिखाई नहीं देता । कदाचित युद्ध किए बिना हुई उस दारुण पराजय के कारण उसे उत्तरमें भेजे जाने की सम्भावना है ।

मिलिटरी की सैन्य रचना

- ❖ वर्तमान कालमें २० हजारकी सेना अर्थात एक डिविजन होती है । उसका नेतृत्व मेजर जनरल करते हैं ।
- ❖ रायबागन एक हजार की सैन्य-टुकडीकी आजके कालकी लेफ्टिनेंट कर्नलके पदकी होगी ।
- ❖ इससे आगेके संघर्षका वर्णन वर्तमान मिलिटरीकी रचनाके अनुपातमें गणना कर प्रस्तुत किया है ।
- ❖ सामान्यतः मिलिटरीकी सैन्य रचना निम्नानुसार होती है ।
- ❖ पदोन्नति की आवश्यकता तथा अन्य कारणों से भारतीय सेना में रैंक और सेनाका बल, पद आदि का नाता वैसा ही होगा ऐसा नहीं है ।

लडाई के महत्त्वपूर्ण भाग की ओर चलते हैं

- वर्तमान (आर्मी) भूदल की संरंचना के आधार पर इससे आगे प्लाटून, कंपनी, ब्रिगेड इस प्रकार निर्देश किया जा रहा है ।
- ९ सिपाही तथा उनपर नाईक, इस प्रकार १० सैनिकों का लेफ्टिनेंट के निर्देशन में एक दल (स्क्वाड)
- ३ दलों की कैप्टन के निर्देश में एक टुकडी (प्लाटून) लगभग ३० से ४० सैनिक.
- ३ से ४ टुकडियों की एक कंपनी मेजर के निर्देशन में । लगभग १५० से २०० सैनिक ।
- ३ से ५ कंपनियों की एक बटालियन लेफ्टिनेंट कर्नल के निर्देशन में लगभग ६०० से ९०० सैनिक ।
- ३ अथवा अधिक बटालियन की एक ब्रिगेड कर्नल के निर्देशन में लगभग ३००० से ५००० सैनिक ।
- तब नेताजी पालकर ब्रिगेडियर पदपर, येसाजी कंक, तानाजी ले. कर्नल तथा करतलबखान मेजर जनरल के पदपर था, यह साधारणतः कह सकते हैं ।

वर्तमान मिलिटरी की रचना
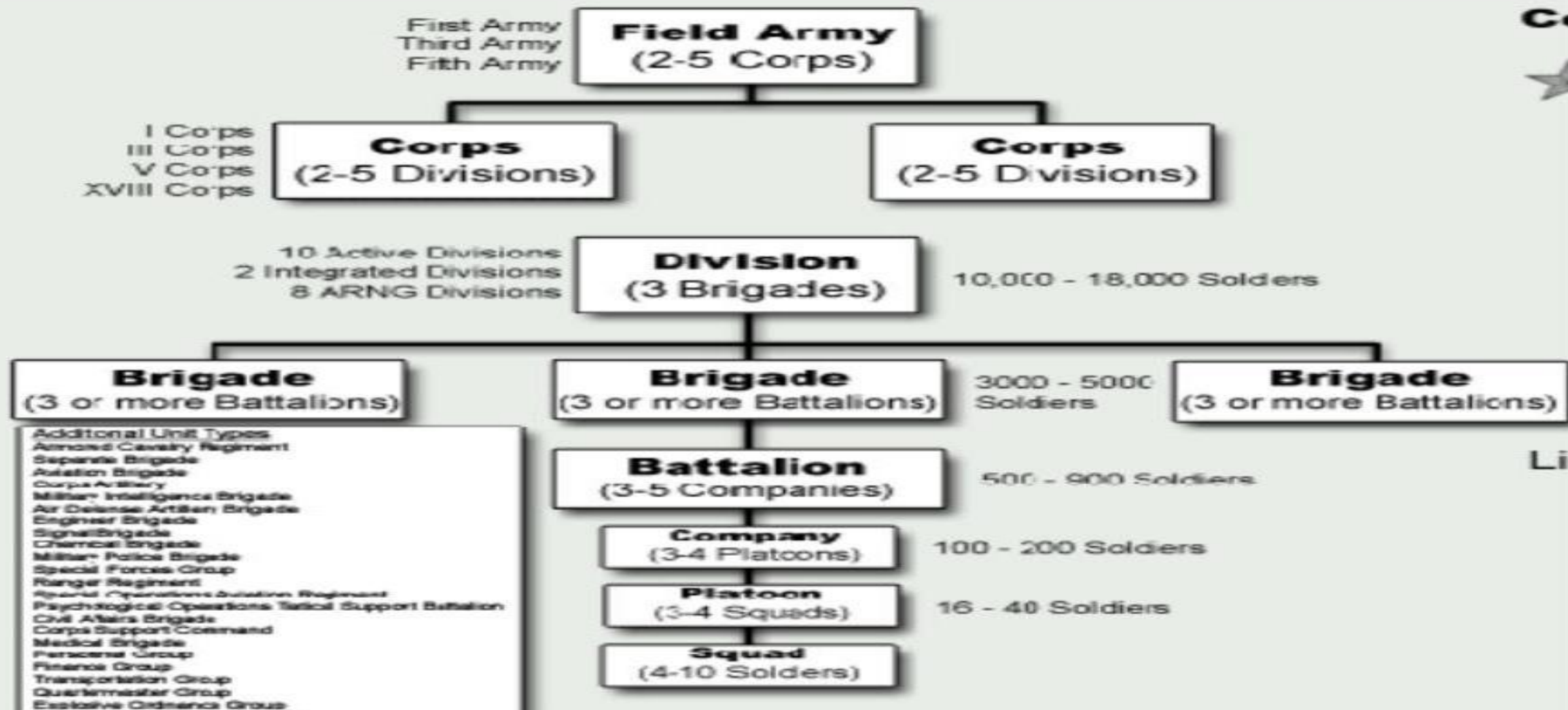
करतलबखान का जानेका मार्ग
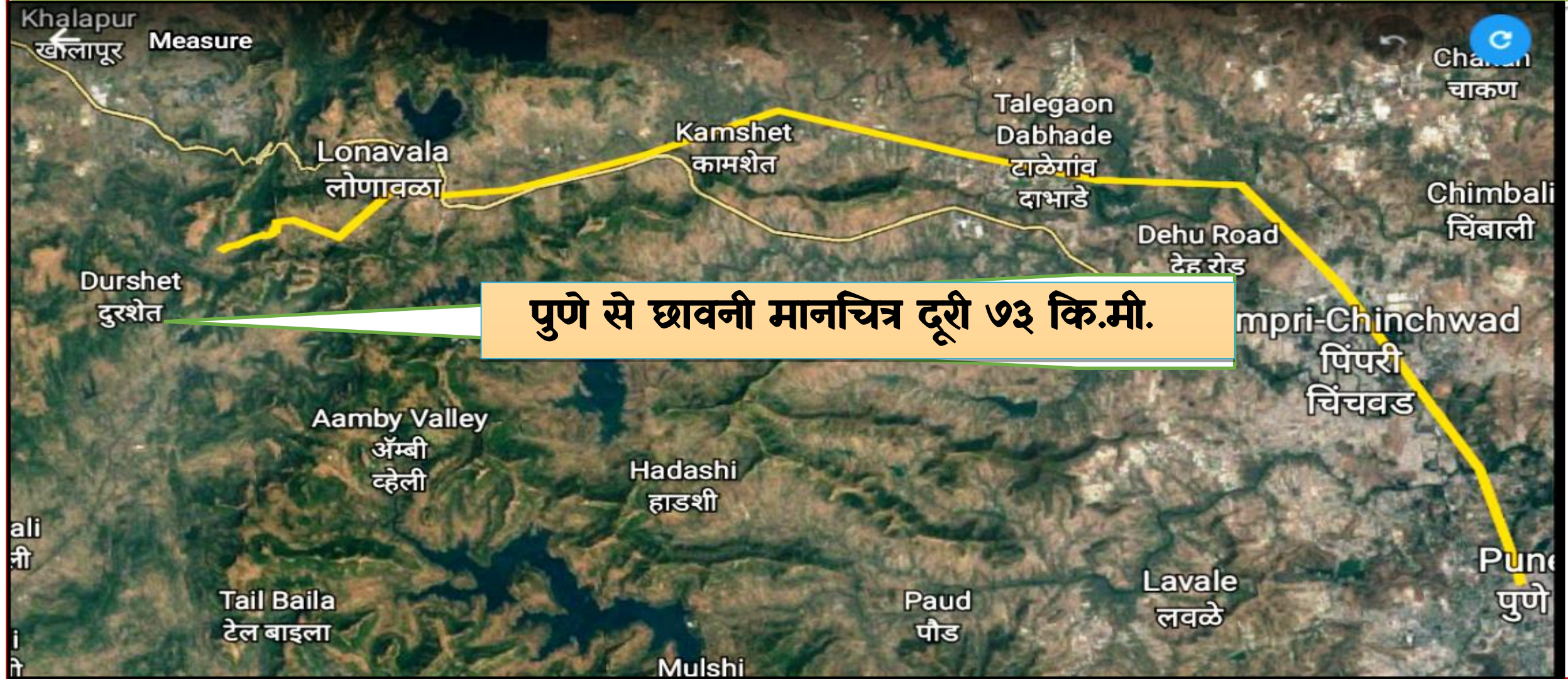
करतलबखान के जाने के मार्गपर सेवा सुविधाओं की आवश्यकता

- सेना के साथमें मालवाहक ५०० से अधिक बैलोंपर, हजारों गधे एवं घोडों की पीठपर तंबू, खान-पीन सेवाके बरतन, छप्परबंदों के डेरे, शाही खजाने की भारी पेटियां, बंदूकें, छोटी तोपें, गोला बारूद आदि भारी शस्त्रसामग्री सहित घुडसवार और पैदल मिलकर बीस हजार से अधिक सेना तथा साथ का दलबल और सहायक सेवा के लिए थे ।
- १० हजार घोडे, मालवाहक ५०० बैल, ५०० गधे, ऐसी सेना संचालित होकर जा रही थी । मार्ग में रुककर भोजन की व्यवस्था देखने के लिए नेतृत्व दल, सैनिकों के निवास के लिए स्थान खोजना, जानवरों के लिए पानी तथा चारे की व्यवस्था करना, बडे सरदारों के तंबू आदि में पानी की व्यवस्था करने में व्यस्त रहते थे ।
- उसके अगले पडाव के स्थानपर पहले गए सेना के दल पीछे का सब समेटकर आगे व्यवस्था करनेके लिए जाते थे ।

करतलबखान का पुणे से जाने का विस्तृत मानचित्र मार्ग

- ❖ लाल महल - (शनिवार वाडा) से खडकी दूरी ७ कि.मी.
- ❖ खडकी, तळेगांव, वडगांव होते हुए लोनावला के आसपास महाराज के गुप्तचरों को भ्रमित करने के लिए बोरघाट से उतर रहे हैं, ऐसा दर्शाया ।
- ❖ कुरवंडा घाट से पाली नागोठणे पहुंचनासुविधाजनक होगा, ऐसा लगा ।
- ❖ उसने परामर्शदाताओं की सहायता से अचानक मार्ग परिवर्तित कर दिया ।

खडकी से देहू तक का मार्ग

- नदियां, नाले, ऊंचे टीले, जानवरोंके लिए पानी और चारे की व्यवस्था ।

- सेना के निवास, भोजन के स्थान का विचार कर निश्चित किया गया मार्ग ..
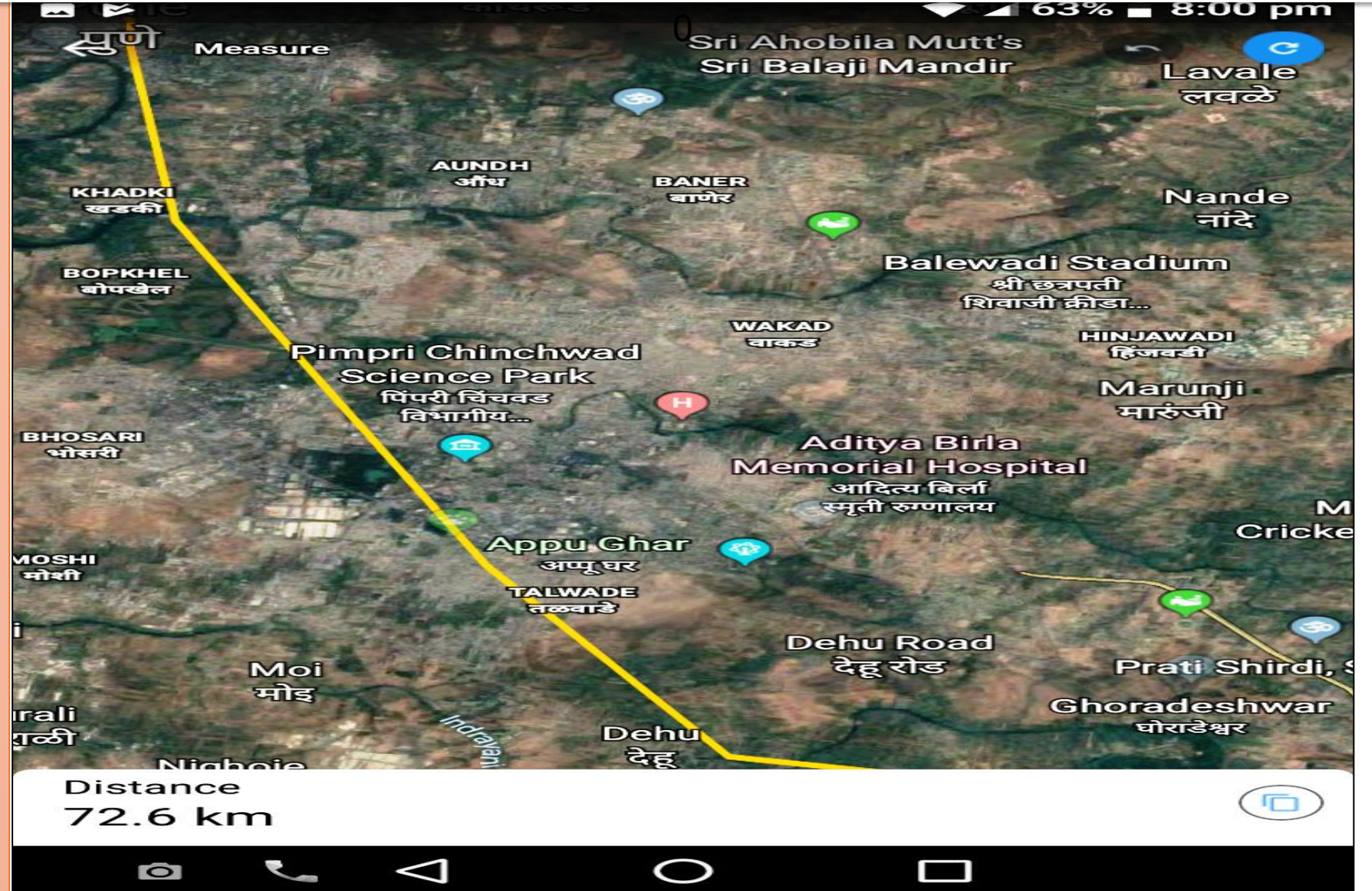
देहू से मळवली तक का मार्ग

- वडगांव, खडकाळे, कामशेत, ऐसे निचले क्षेत्रसे आगे सरकते समय...
- अलग-अलग सरदार अपनी सेनाका हाल, गिनती, तोपें, गोला बारूद पर विशेष ध्यान रखे हुए थे । इस युद्धमें विजय प्राप्त करना सरल है ।
- वह करते ही...
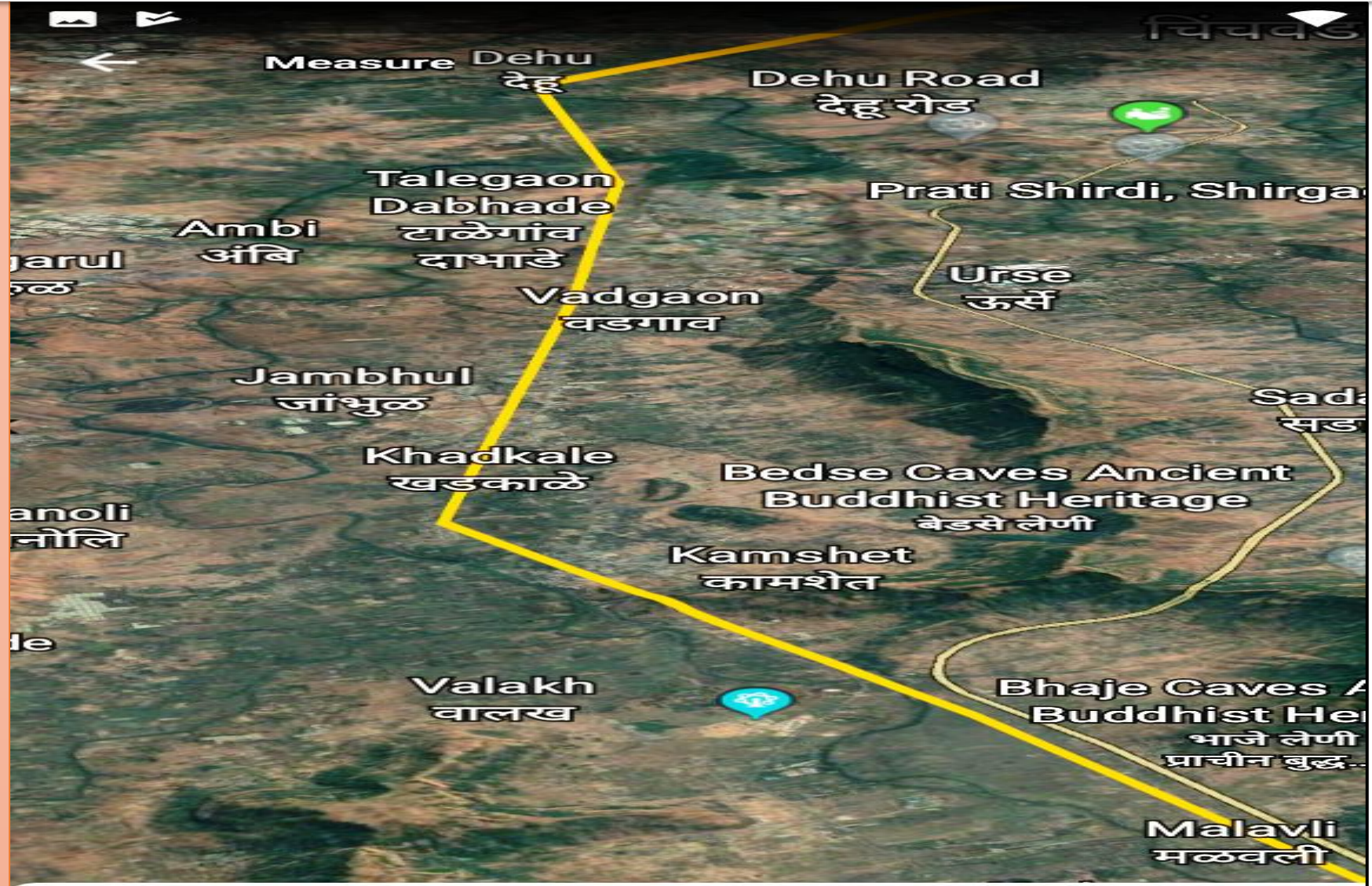
वडगांव से मळवली ७ कि.मी. मार्ग
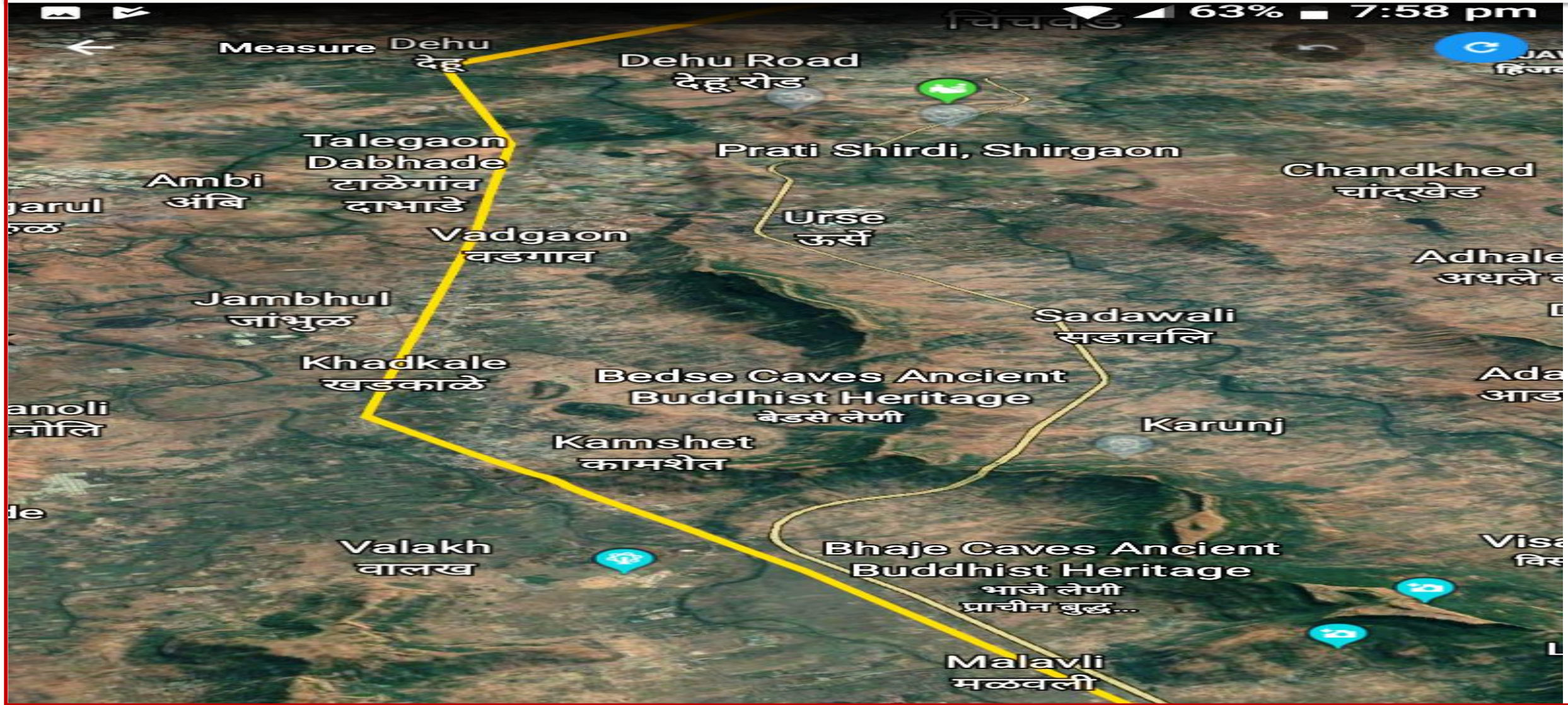
मळवली से लोनावळा १३ कि.मी. मार्ग

- मळवली से वर्तमान लोनावला के आसपास से १३ कि. मी. जानेवाले मार्गका मानचित्र ।
- रायबागन अपनी सेना नांदेड क्षेत्रसे लेकर आई थी । वह थकी हुई थी ।
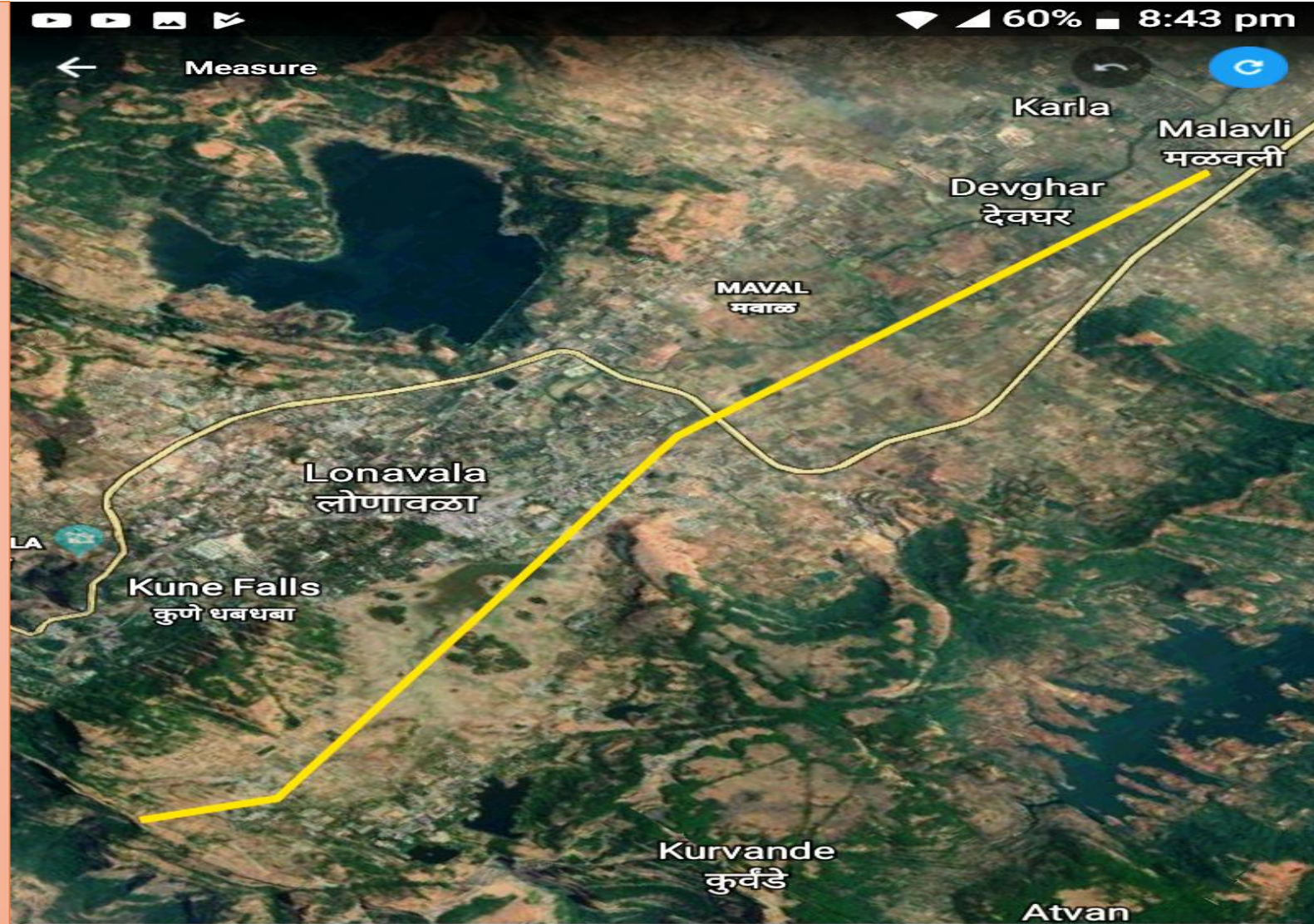
एक दिन पूर्वके पडाव का गहरा स्थान

करतलब खाना का आदली रात्र का तल

(आजका आय एन एस शिवाजी पार्क)

मनोरथ में मग्न उत्तर भारत के सरदार

- पहाडों में छिपकर इस प्रकार लडने में मजा नहीं है ।
- इस प्राणघाती पर्वत श्रृंखला में छिपा शिवाजी हाथ में आना चाहिए ।
- वह चूहे का बच्चा । हमारे सामने उसकी क्या मजाल ?
- यहांसे यह काम समाप्त कर उत्तर भारत में अपने संस्थान में जाकर अगले पदके लिए जुगाड करना प्रारम्भ करना पडेगा ।
- औरंगजेबने अपने ऐय्याश मामा शाहिस्तेखान को यहां सुबेदार बनाया । वह आराम से बैठता है; परन्तु हमें भगाता है ।
- करतलब खान को ५ हजारी सेनानी बनने की चिन्ता पडी थी। जनाना साथ था । तो उसे अभियान कितने भी समय तक चले, फरक नही था ।

कुरवडे घाट की भीषणता

- अपने निरीक्षण दल भेजकर उस मार्ग से जानेपर क्या असुविधा और संकट है ? इसकी जानकारी करतलबखान ने पहले प्राप्त की । उसे उसके गुप्तचरों से पता चला कि शिवाजी महाराज इस क्षेत्र में नहीं आया हैं । तब उसने १ फरवरी १६६१ को कुरवडे के पठार पर रात बिताकर सवेरे की नमाज पढी । तंबू और खानपान सेवावाले पहले गए । तत्पश्चात सबने अपने-अपने शस्त्र और जानवर साथ लेकर एक पर्वत शिखर की पगडंडी से नीचे उतरना प्रारम्भ किया ।
- अत्यन्त तीव्र ढलानवाले इस तीन कि.मी. घाटी की एक ओर खाई थी । दूसरी ओर ऊंचे पर्वत की चोटी से वह सेना अपने साथ लाए भारी और आवश्यक सामग्री सहित कठिन मार्ग से नीचे उतर रही थी ।

कुरवंडा घाटी का प्राणघाती ढलवां मार्ग

मुगल सेना को हाथ उठाकर समर्पण क्यों करना पड़ा? एक भयानक ढलान और संकरी जगह के कारण! सभी हथियारों और उपकरणों को जानवरों के साथ ले जाना असंभव होता।

650 M
600 M
700 M
550M
नागफनी या ड्यूक की नाक आसपास के क्षेत्र में है
450M
कुरवंडे घाट सुरुवात
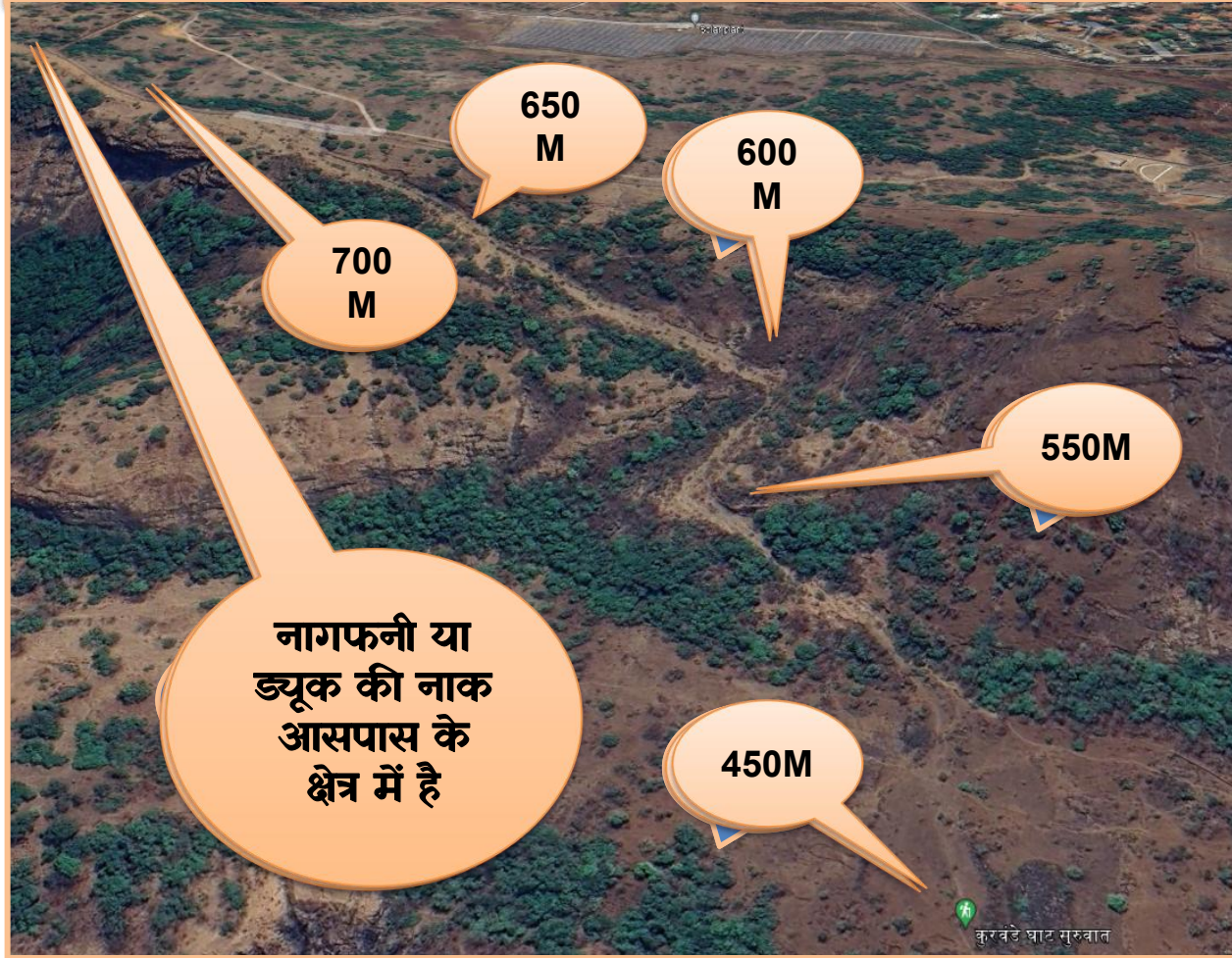
खाई के संकरे एवं सीधी ढलान से ६५० मीटर ऊपर ९० मीटर पर छावनी के निचले प्रदेश में प्रवेश

650 m
500 m
360 m
मोड
230 m
160 m
130 m
90 m
Chavani
चावनी

निकट से
खतरनाक मोड
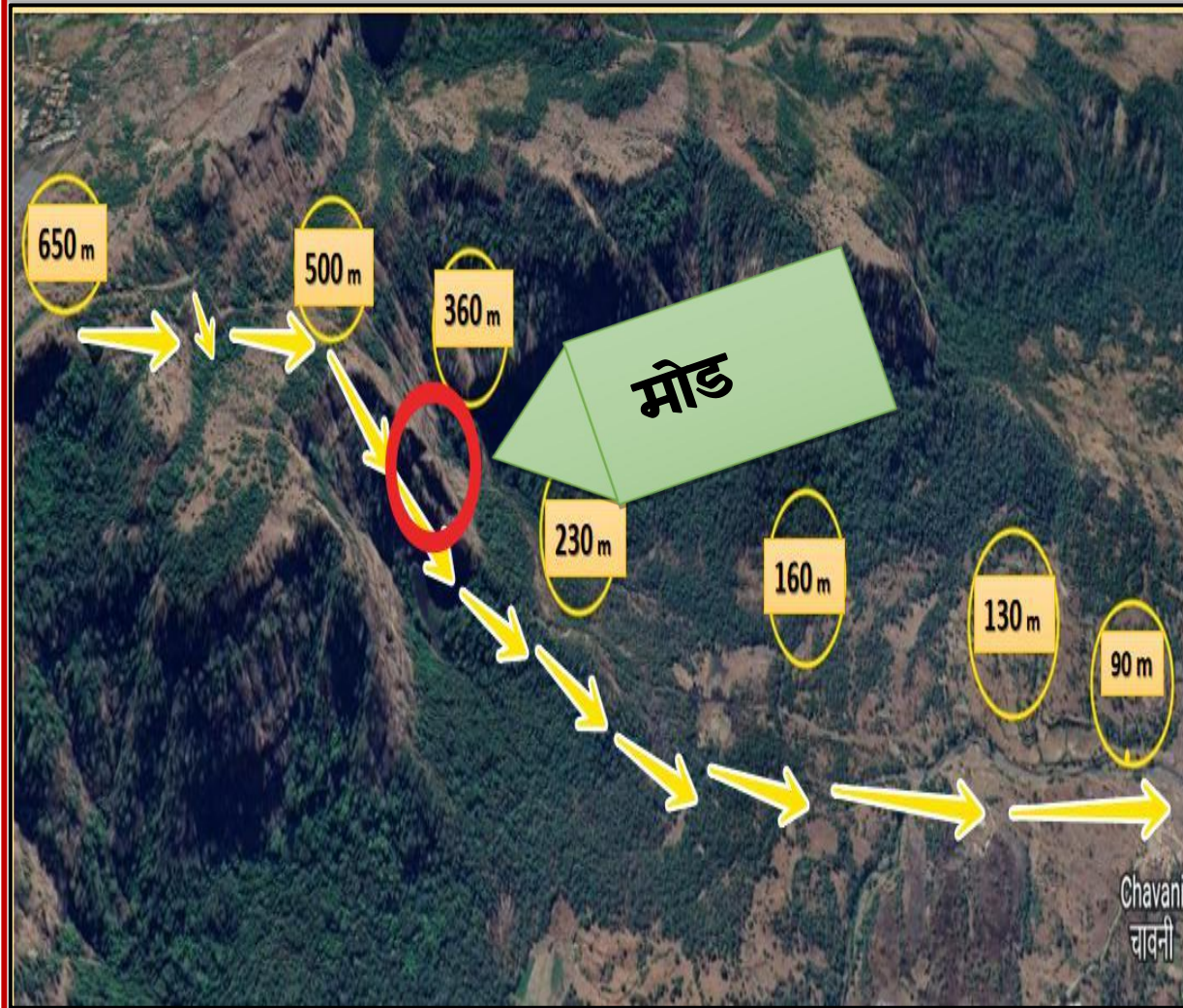
सैनिकों के उतरते समय का लाल रंग और लौटकर चढते समय का मार्ग नीले रंग से मार्ग जान बूझकर अलग दिखाया है ।
भारी और अत्यधिक भार पीठपर लिए जानवरों के उतरने के लिए अत्यन्त संकटदायी फिसलनवाली ढलान
Google

संकरे एवं विकट घाट से उतरते समय हुईं दुर्घटनाएं और फैली भीषण बेचैनी

- पीछे मुडकर देखते-देखते ऊंचे-ऊंचे पर्वतों की चोटी, संकरे तथा एक ओर गहरी खाई तथा एक ओर खडा पहाड, घनी झाडियां आदि की क्षमता देखते हुए, गलती से भी इस मार्ग से न लौटना पडे, ऐसा कहते हुए सेना निचली छावनी के क्षेत्र में कठिनाई से आ पाई ।
- खान एवं बडे सरदार अपने-अपने परिवार के बडे दलबल के साथ अपनी-अपनी सेना की गणना और भोजन की व्यवस्था कर गहरी सांसें ले रहे थे ।
- निरीक्षण टुकडी आगे के मार्ग के कष्टमय क्षेत्र, जानवरों के पीने के पानी की व्यवस्था देख रही थी । इससे आगे क्या अब और कहीं नीचे उतरना पडेगा, अपनी सब युद्धसामग्री रचकर युद्ध की तैयारी के लिए आवश्यक शस्त्र खोलकर उनकी देखरेख करने के लिए निकट का दुर्ग कहां है ? इस विषय पर सैनिकों में आपस में चर्चा हो रही थी ।
- शिवाजी अचानक आते हैं और युद्ध की तैयारी के लिए समय न देकर अचानक 'हर हर महादेव' कहते हुए उनकी सेना पत्थर, बाण, बंदूक आदि से खान की असावधान सेना पर टूट पडती है, यह सुना हुआ था...

  इस बार भी क्या ऐसा ही होगा, ऐसा मन में भय लग रहा था...

शिवाजी महाराज की सैन्य गतिविधियां

- ❖ महाराज कहां थे, इससे उनकी सैन्य गतिविधियां निश्चित कर सकते हैं ।
- ❖ शाहिस्तेखान कोकण में सेना भेजकर कल्याण-भिवंडी से नीचे सुधागड तक के दुर्गों पर कब्जा करने के लिए निकलेगा, ऐसा अनुमान लगाकर महाराज पाली-पेण के आसपास होने चाहिए ।
- ❖ वह समाचार मिलने पर शाहिस्तेखान ने करतलबखान को तत्काल कोकण में ही शिवाजी महाराज का बंदोबस्त करने के लिए भेजा होगा ।
- ❖ उक्त मानचित्र महाराज को राजगडसे जाना होगा, ऐसा मार्ग दर्शाता है ।

युद्ध की तैयारी में सन्देश वाहकों की रचना का प्रारम्भ

- ❖ महाराज के इस अभियान की सेना में प्रारम्भ में जानेवाले घुडसवारों में वाद्य बजानेवाले घोषक और ध्वज रंग एवं आकारके माध्यम से हाथों का संचालन कर दर्शक टुकडी में न्यूनतम २५-३० घुडसवार होंगे ।
- ❖ उनका शंख, शिंग, तुतारी, सीटियां, ढोल आदि अलग-अलग ध्वनियों की सहायता से महाराज के सन्देश दूरतक फैली सेना को आदेश देने से ही उन साधनों का किस प्रकार उपयोग किया गया था, इसका प्रत्यय होता है ।

शिवाजी महाराज की सेना का एकत्रीकरण

- वर्तमान काल की पदवियां महाराज के सरदारों को दें, तो वे ब्रिगेडियर नेतोजी पालकर, लेफ्टिनेंट कमांडर्स तानाजी मालुसरे, येसाजी कंक ऐसे होने चाहिए । उनके मावळों की (सैनिकोंकी) सेना दो हजारसे अधिक होनी चाहिए । इसके अतिरिक्त अन्य अभियानों पर गए हुए कुछ सरदारों को बुलावा भेजकर उनकी शेष सेना को महाराज के पीछे उंबर टीले पर छिपाकर खडा किया होगा । महाराजने तीनों टीलों के निचले क्षेत्र में स्थित सेना की गतिविधियोंपर बारीकीसे ध्यान रखा होगा ।

- यह सर्व सेना सावधानीसे सवेरे आठ बजेतक अपने-अपने स्थानपर पहुंचे, ऐसा आदेश प्रमुख सेनापतिसे मिला होगा ।

- आक्रमण कर दुर्गके भीतर घुसने हेतु द्वार अथवा मोटी लकडी की बाधाएं पार करने के लिए कुल्हाडी, सब्बल, लंबी लकडीके हथौडे, घन, छैनियां आदि का तोडफोड दल सदैव साथ होगा । महाराज का स्वयंका सुरक्षा दल, घोषवादक, परामर्शदाता वकील आदि दल महाराज के साथ सदैव अभियान में रहते थे । इस अभियान के महत्त्वपूर्ण सरदारोंने बाद में खान द्वारा छोडे गए जानवर, हथियार प्राप्त किए तथा खजाना सरकार में जमा किया ।

शिवाजी महाराजकी सेना में शस्त्र और अन्य युद्ध सामग्री की रचना

- शत्रु सेना को भ्रमित कर भगदड मचाने के उपाय प्रारम्भ हुए ।
- इसके लिए मिरची की धूनी, नौसागर के (अमोनियम क्लोराइड) समान धुआं करनेवाले पदार्थ बोरे में घोडेपर लादकर, साथ लाई गई सामग्री से तथा ऐन समयपर आसपास के गावों से उपले एकत्रित कर उनका बडा धुआं कर सामने का दिखाई देना बंद हो जाए, ऐसी तैयारी की गई ।
- उग्र गंध की लपटें तैयार कर भ्रमित सैनिकों को तात्कालिक रूप से पीछे हटना पडेगा, ऐसी स्थिति निर्माण करने की नेतृत्व करनेवाले दलने तैयारी की । तुकसाई के आसपास अंबा नदी के संकरे पात्रके दोनों किनारों पर वे छिप गए ।
- ब्रिगेडियर पद की सेनाकी संख्याके सेनापति नेतोजी ने अपने पैदल सैनिकों सहित वर्तमान स्मारक के पीछे स्थित पर्वतसे शत्रु सेना के आगमन से पूर्व अपने २ से ३ प्लाटून्स के धनुर्धारी सैनिकों को एक के पीछे एक छिपकर बिठाया ।

येसाजी कंक और तानाजी मालुसरे के प्लाटून्स

- ❖ श्वेत धुएं की लपटें दिखाई देने और रणवाद्य बजने पर नेतृत्व करनेवाली सेना गुलेल से पत्थर फेंककर शत्रुका अनुशासन तोडकर उन्हें भागने के लिए बाध्य करे एवं भ्रमित करे । उसके पीछे प्लाटून कमांडर के मेजर पदके सरदार बाणों की टुकडी से जानवरों को लक्ष्य बनाकर उन्हें भडकाने के लिए आक्रमण करें ।
- ❖ इसमें से बची हुई शत्रु सेना हम पर आक्रमण करने के लिए पलटकर आएगी । उन्हें तलवार से मारने के लिए एक-एक टुकडी (स्क्वाड्स) झाडी में छिपकर तैयार थी । येसाजी कंक, तानाजी मालुसरे के समान लेफ्टिनेंट कर्नलके पदके सरदार अपनी अपनी सेना के साथ गारमाल की चढान पर छिपे हुए थे । वे भी पत्थर, बाण और तलवारों से आक्रमण की तैयारी में एक के पीछे एक प्लाटून रचकर छिपे हुए थे ।
- ❖ दोनों कमांडरों के पास रणवाद्यों का दल और ध्वजसंचालन का दल महाराज के सांकेतिक आदेश को समझकर उसके अनुसार सरदारों को समय-समय पर सावधान कर रहे थे ।

महाराज की सेना की चतुर रचना
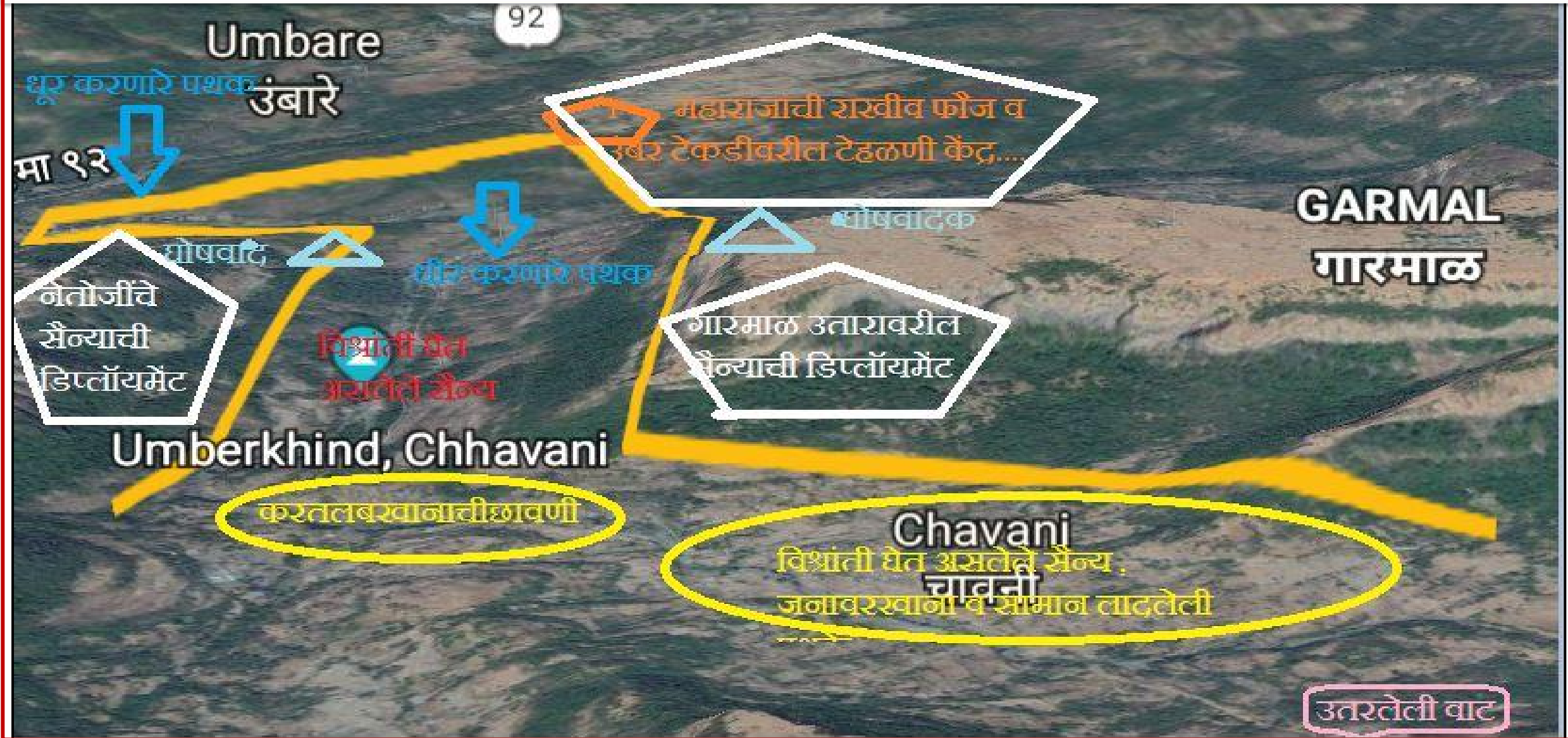
अंबा नदी के पास युद्ध का प्रारम्भ

- करतलबखान की छावनी में... नदी पात्र के क्षेत्र में चूल्हे जलाकर बनाए गए भोजन को सेना में वितरित करने की हडबडी में रसोईघर के लोग थे । सैनिक अपने-अपने जानवरों के शरीर का निरीक्षण कर किसे किस स्थानपर चोट पहुंची है, यह पूछताछ कर रहे थे ।
- उधर महाराजके नेतृत्व की पलटन पर धुआं निर्माण कर शत्रु के नेतृत्व की सैनिक टुकडियों को पीछे भगाकर भागदौड की परिस्थिति उत्पन्न करने के लिए उपले जलाए गए ।
- पीछे गई हुई लौटकर आनेवाली मुगलों की सेना पर बाणों की वर्षा करनेवाले और पथराव, धनुष बाण तथा गुलेलवाले प्लाटून ने धावा बोल दिया ।
- श्वेत धुआं देखकर आसपास के टीलोंपर खडे घोषदलों ने बडी मात्रा में रणवाद्य बजाना प्रारम्भ किया ।
- इस प्रकार दोनों पर्वतों के चढाव पर जो सैनिक आनेका प्रयास करेंगे, उन्हें मारकर घायल करना और लौटने के लिए बाध्य करना प्रारम्भ हुआ ।

अचानक आक्रमण एवं भ्रम की स्थिति

❖ करतलबखान भोजन के पश्चात विश्राम कर रहे देश के विभिन्न क्षेत्रों से इस अभियान के लिए चुने गए उसके सरदार, जो एक-दूसरे को अभी ठीक से पहचानते भी नहीं थे । वे अचानक उत्पन्न हुई आपातकालीन परिस्थिति से हडबडा गए थे ।

❖ अचानक हडबडाहट की आवाज और महाराज के घोषवाद्यों से उत्पन्न रणभेरी की आवाजसे कुछ गडबड हुई है, यह ध्यान में आनेपर महत्त्वपूर्ण सरदारों को परिस्थिति देखने के लिए करतलबखान ने तुरन्त भेजा ।

❖ अपनी सेना को भयभीत देखकर उन्होंने सेना को धीरज बंधाकर शिवाजी महाराज की सेना पर आक्रमण करने का आदेश दिया । उस आदेश के प्रभाव से सैनिकों ने अपने-अपने शस्त्र उठाकर झाडी में छिपे हुए सैनिकों को खोजकर मारना प्रारम्भ किया ।

❖ बाणों से अचूक मारनेवाले मुगल तीरंदाज अपनी युद्ध कुशलता से एक-एक मावळे को घायल कर लौटा रहे थे । शिवाजी महाराज की सेना में सैनिकों की संख्या कम थी । अतः उनके आक्रमण का सामना करने हेतु उनकी सेना कम पडने लगी ।

शिवाजी महाराजकी तीनों ओरसे पूर्णत: घेर लेनेवाली सेनाकी रचना
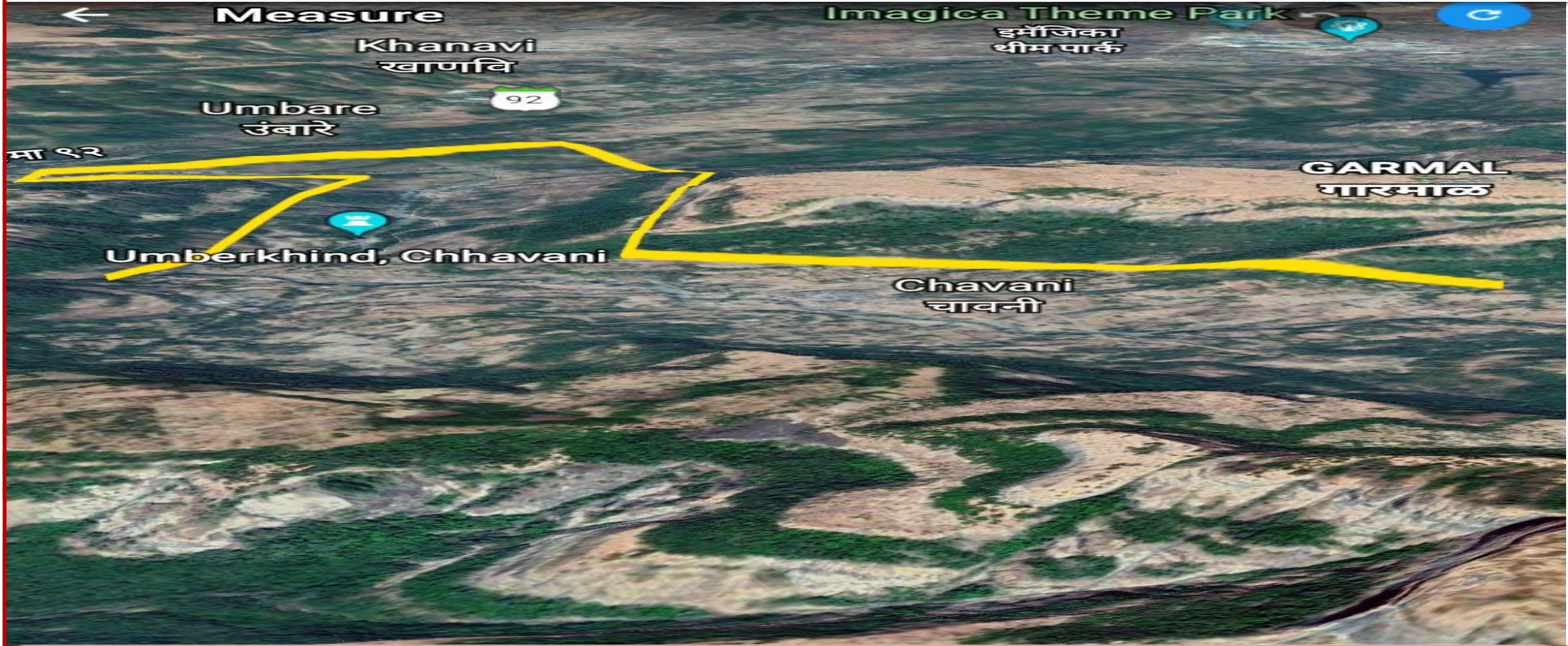
आगामी मुठभेड का परीक्षण

- पुनः एक बार बडी आग लगाकर जलते हुए उपले फेंककर दूर कहीं छिपने के लिए मावळे समय प्राप्त करने लगे । हवा की दिशा बदलने के कारण कभी कभी उनपर धुएं का प्रभाव हो रहा था तथा छिपने का स्थान खोजने में सम्भ्रम उत्पन्न हो रहा था ।
- अचानक नदी के दूसरे किनारे के ऊंचे टीले अभी तक शान्त बैठे मावळों की 'हर हर महादेव' की रणगर्जना से गूंज उठी ।
- सरदारों से परिस्थिति की पूछताछ करते समय खान को समझ में आया कि उसपर शिवाजी महाराज का आक्रमण हो चुका है । सम्भवतः शिवाजी महाराज कहीं आसपास ही होंगे । यदि ऐसा है, तो सहज ही वे हमारे सामने आ गए हैं तथा हमारे पास भरपूर सेना है ।

करतलबखान के सरदारों का सेना को प्रोत्साहन

- यद्यपि प्रारम्भ में हमारे सैनिकों को शिवाजी महाराज की सेनाने घेर लिया, तथापि कम संख्यावाली सेना हमारी बडी संख्यावाली सेना का सामना नहीं कर पाएगी । वे भाग जाएंगे अथवा लडकर मर जाएंगे ।
- सेना का मनोबल बढाने के लिए वह स्वयं तंबू से बाहर निकला और चिल्ला-चिल्लाकर पुनः लौटकर मावळों को समाप्त करने के लिए भडकाने लगा । घायल सैनिकों को लौटा हुआ देखकर उन्हें सम्बोधित कर चिल्लाता रहा कि आप धुएंसे क्यों घबराते हो ? पीछे घूमो और उनका मुकाबला करो ।
- उसके अनुसार सेना के कनिष्ठ सरदार अपनी-अपनी सेना की टुकडियों को चिल्ला-चिल्लाकर पुनः नदीके पात्र के दोनों ओर झाडियों और वृक्षों में छिपी शिवाजी महाराज की सेनापर आक्रमण करने के लिए उत्साहित करने लगे । अतः मुगल सेना पुनः जोश से लडने लगी । लगभग घण्टाभर यह होता रहा ।

अंबे नली और महाराज खडे थे, वह उंबरे टीला

२ डी मानचित्र में अंबे नली

Khopoli Pali Road
Sadhana Villa
CHAVANI
ARGAON NV
Nature campsite
2BHK VILLA IN the LAP OF NATURE
StayVista at Enchanting Pastures
TUKSAI

३ डी मानचित्र में अंबे नली

Khanavi
Ganesh
खंबेवाडी
92
Umbare
उंबारे
रा.मा ९३
1.55 km
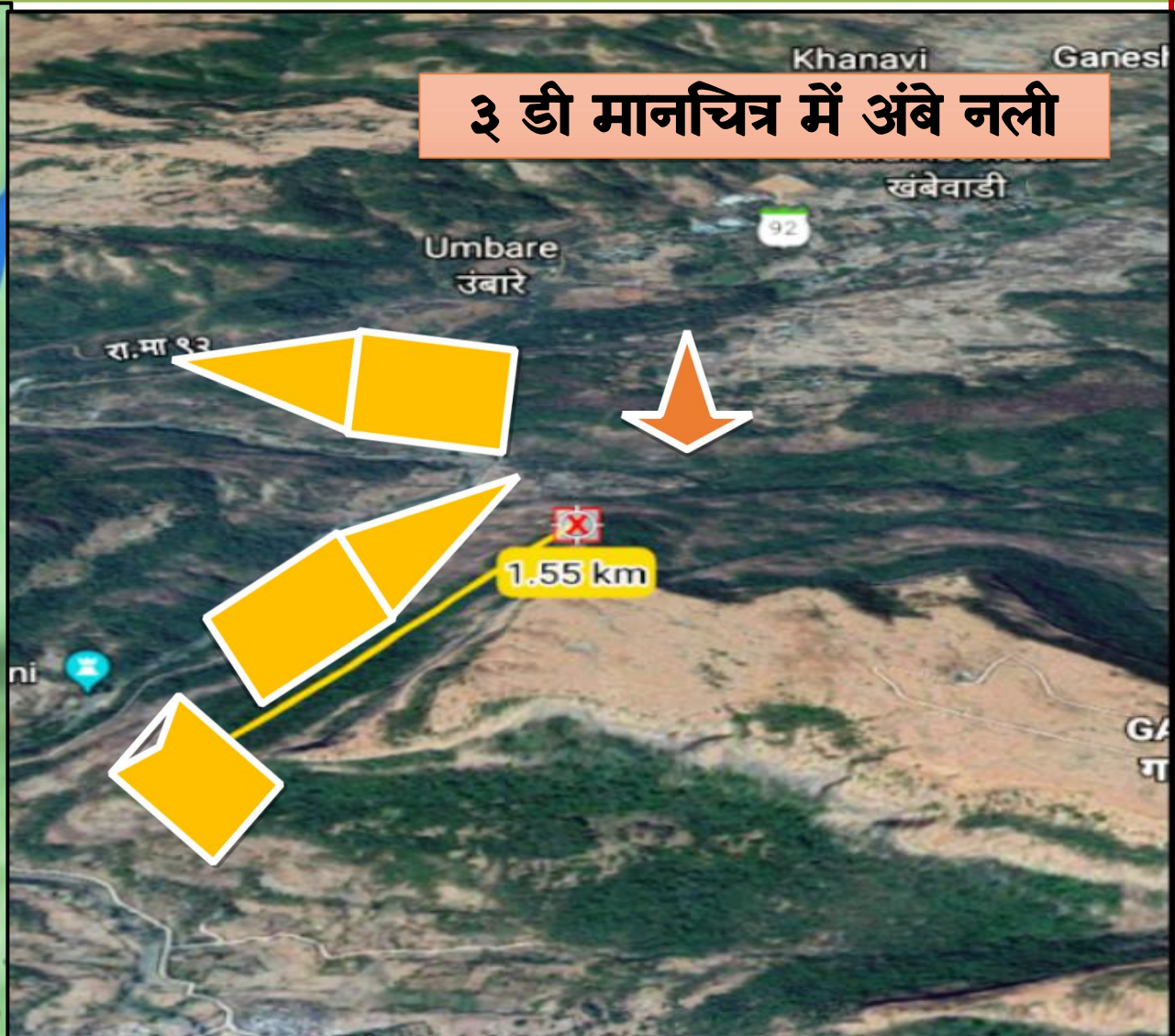
उंबर टेकडी का एक ऊंचा स्थान इसलिए चुना गया था ताकि शिवाजी महाराज अपनी आंखों के सामने और अपने दाहिनी ओर अंबा नदी का क्षेत्र देख सकें।

करतलबखानकी अंबे नलीमें शरणागति - आगामी भाग २ में जारी